© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

रामचरितमानस की वैज्ञानिक आयाम एवं सामाजिक समरसता

सुशील कुमार यादव
हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
म0प्र0

शोध आलेख सार– गोस्वामी तुलसीदास एक उच्चकोटि के समरसतावादी कवि हैं उन्होंने रामचरितमानस में न केवल सामाजिक सरसता स्थापित करने की पहल की, बल्कि धर्म, राजनीति, साहित्य इत्यादि क्षेत्रों में भी समरसता स्थापित करने की पहल की है तुलसी ने जीवन और जगत के सभी क्षेत्रों में समरसता स्थापित करने का अतुलनीय प्रयास किया है। इसलिए तुलसी एक उच्चकोटि के कवि, महान लोकनायक, सफल समाज सुधारक, भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ प्रचारक हैं।

मुख्य शब्द – गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, समरसतावादी, ग्रामीण।

गोस्वामी तुलसीदास एक ग्रामीण नींव के कवि है। उनके समय में प्रकृति की शक्तियों पर वैज्ञानिक विजय के स्थान पर तान्त्रिक और शकुनमूलक विषय पर यकीन था। इसलिए मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते रागात्मक और संघर्षमूलक नही हो सके। फलस्वरूप प्रकृति का चेतना के नाना स्तरो पर आकलन मात्र हुआ गोस्वामी ने प्रकृति के ग्रामीण पक्षो को दृष्टान्तरूप में लिया है। इसलिए रामकथा के मिथिकीय परिवेश में प्रकृति ने मानस की रामकथा को तत्कालीन सांस्कृतिक पर्यावरण भी प्रदान किया है। रामचरिमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने प्रकृति का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रकृति अवतार राम की भक्ति में तन्मय हो जाती है और सेवा तथा सहयता करती है वह उनके सुख से सुखी और उनके दुःख से दुखी भी होती है, सारांस में, प्रकृति राम रूपी दीपक का चेतन–दर्पण हो जाती है जब राम वन जाते हैं तब पशु–पक्षी और हिरनो तक ने कुछ आहार नहीं किया सब लोग श्रीराम जी के वियोग में व्याकुल हो उठते हैं –

राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढे।।
नगर सफल बनु यहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर–नारी।।[1]

अयोध्याकाण्ड–पृ0339, 83(1)

वन में जाते समय श्रीराम जी कहते हैं–

अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा।।

कोल किरात कुरंग विहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपति संगा।।[2]

अयोध्याकाण्ड–पृ0 349, 97(4)

यहाँ के दुर्गम रास्ते, जंगली धरती, पहाड़, हाथी, सिंह अथाह तालाब एवं नदियाँ, कोल, भील, हिरन और पक्षी ये सब साथ रहते सभी मुझे सुख देने वाले होंगे। जहाँ–जहाँ रघुनाथ जाते हैं, वहाँ–वहाँ बादल शीतल छाया करते हैं। जब से राम ने पर्णकुटी वास किया, पर्वत, वन, नदी, और तालाब शोभा से छा गए तथा पशु–पक्षियों के समूह आनन्दित रहने लगे। उधर चित्रकूट के वन में श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के विहार करते हुए। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि–

रामकथा मन्दाकिनी चित्रकूट चित चारू।

तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारू।।[3]

लोकवादी तुलसीदास–विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ0–42

अर्थात् रामकथा मन्दाकिनी है, चारू चित चित्रकूट है स्नेह सुन्दर वन है जिसमें सीता–राम विहार करते हैं तुलसी को प्रकृति की गोद में विचरण करते राम और सीता का रूप सम्भवतः सबसे अधिक प्रिय है वनमार्ग के पथिक सीता–राम और लक्ष्मण के सौन्दर्य का चित्रण वे तन्मय होकर करते हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं कि–

खग मृग बृंद अनंदित रहही। मधुप मधुर गुंजत छवि लहही।

सो बन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रगत रघुबीर बिराजा।।[4]

अरण्यकाण्ड पृ0 520, 13(3)

अर्थात् पशु और पक्षी आनन्दित रहते हैं और भौंरे मधुर गुंजार करते हुए शोभायमान हो रहे हैं जहाँ प्रत्यक्ष श्रीरामजी विराजमान हैं उस वन का वर्णन सर्पराज शेष जी भी नहीं कर सकते। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में पशु–पक्षियों का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है। जब सीता जी को रावण हर ले जाता है तो श्रीराम जी पशु–पक्षियो से पूछते हैं कि–

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृगनैनी।।

खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना।।[5]

अरण्यकाण्ड पृ0 539, 29(5)

हे पक्षियो! हे पशुओ, हे भौंरो की पंक्तियाँ। तुमने कही मृगनयनी सीता को देखा है खंजन, तोता, कबूतर, हिरन, मछली, भौरो की समूह, प्रवीण कोयल।। श्रीराम जी सीता जी को जंगल में ढूढते–ढूढते जटायु के पास पहुँचे तो जटायु घायल अवस्था में पड़ा था श्रीराम जी उसके सिर पर हाथ फेर दिये तो जटायु की सारी पीड़ा दूर हो गई जटायु ने श्रीराम को धीरज धरकर सब बताया कि–

तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भवभीरा।।

नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही।।[6]

अरण्यकाण्ड पृ0 540, 30(1)

हे भव (जन्म–मृत्यु) के भय का नाश करने वाले श्रीरामजी सुनिए हे नाथ रावण ने मेरी यह दशा की है उसी दुष्ट ने जानकी जी को हर लिया है। सीता जी को ढूढने में प्रकृति के साथ पशु पक्षियों ने भी श्रीराम का बहुत सहयोग किया। श्रीराम जी का यह सहयोग कर वह अपने को धन्य मानते हैं।

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास के वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने से यह पता चलता है कि रामचरितमानस में तुलसी ने त्रयलोक के हर्षित होने का कारण स्पष्ट किया है।

''रामराज बैठे त्रयलोका, हर्षित भये गये सब सोका''[7]

तुलसीदास–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ0सं0 33

कहकर गोस्वामी जी ने स्पष्ट किया है कि राम के राज्य में त्रयलोक के हर्ष का कारण है सब प्रकार के शोको का निर्मूलन। शोक तीन प्रकार का होता है दैहिक, दैविक, भौतिक। इनको ही त्रिताप भी कहा जाता है। इन दुःखो का कारण मीमांसा करने पर ज्ञात होता है कि दैहिक दुःख मनुष्य के अपने कुकृत्यो के परिणाम होते है। दैविक दुःखो का कारण प्रत्यक्षतः दिखाई नही पड़ता वे प्रकृति अथवा अज्ञात शक्तियो द्वारा घटित होते है दुर्भिक्ष, सूखा, बाढ, अनावृष्टि से उत्पन्न दुःख इस प्रकार के है किन्तु आज का विज्ञान यह मानने लगा है कि प्राकृतिक नियमों के विश्रृंखलन में मानवीय व्यवहार का हाथ होता है आजकल माना जा रहा है कि जंगलो को काट देने से वर्षा अनियंत्रित हो रही है पर्यावरण ऐसे अनेक तथ्य हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे है। अर्थात् दैवी दुःखों के लिए भी मनुष्य उत्तरदायी है भौतिक दुःखो का कारण तो स्पष्ट रूप से सामाजिक ही है चोरी, डाका, हत्या, शोषण, संघर्ष आदि दुःख समाज की दुर्व्यवस्था और सिद्धान्तहीनता के कारण उत्पन्न होते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नही काहुहि ब्यापा।।[8]

तुलसी–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ0 34

राम के राज्य में कोई भी त्रिताप से पीड़ित नही था अर्थात् व्यक्ति, समाज और प्रकृति में अपेक्षित सामंजस्य था। सभी अपने आदर्शो और नियमो के अनुसार आचरण करते थे यह स्थिति किसी भी राज्य अथवा राजव्यवस्था के लिए काम्य है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में दैहिक, दैविक एवं भौतिक तीनो का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है। कवि होने से पहले वे भक्त, दार्शनिक और सन्त है। उनके मन में राम के प्रति प्रगाढ़ अनुराग है। वे प्रकृति के प्रत्येक कण में उन्हीं की झलक देखते हैं एवं उनकी दिव्यगाथा का गान करके जन मन का परिष्कार

करते हैं। तुलसी अपने काव्य का यही उद्देश्य मानते हैं। राम के चरित का अध्ययन करने के लिए तुलसीदास ने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा का प्रयोग किया है प्रकृति राम की सृष्टि, उनकी लीलाभूमि और रामरूप है अतएव उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति को उसी सीमा तक चित्रित किया है जिस सीमा तक वह राम के चरित का प्रकाशन करती है। कवि के काव्य का उद्देश्य प्रकृति एवं पशु–पक्षियों का वर्णन करना नही था बल्कि उसके माध्यम से राम, उनकी अवतार लीला एवं भक्ति के निरूपण को और प्रभावशाली बनाना था।

तुलसी ने शैव एवं वैष्णव की भाँति शाक्तो एवं वैष्णवो के संघर्ष एवं वैमनस्य को दूर किया। तुलसी ने रामावत सम्प्रदाय एवं पुष्टिमार्ग, सगुण एवं निर्गुण, नर और नारायण, राजा एवं प्रजा, धर्म एवं समाज में भी समरसता स्थापित करने की भरसक प्रयास किया है।

गोस्वामी तुलसीदास एक उच्चकोटि के समरसतावादी कवि हैं उन्होंने रामचरितमानस में न केवल सामाजिक सरसता स्थापित करने की पहल की, बल्कि धर्म, राजनीति, साहित्य इत्यादि क्षेत्रों में भी समरसता स्थापित करने की पहल की है तुलसी ने जीवन और जगत के सभी क्षेत्रों में समरसता स्थापित करने का अतुलनीय प्रयास किया और अपने विचारो द्वारा तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमता, विद्वेष, वैमनस्य, कटुता आदि को दूर करके पारस्परिक स्नेह, सौहार्द, समता, सहानुभूति आदि का प्रचार किया इसलिए तुलसी एक उच्चकोटि के कवि, महान लोकनायक, सफल समाज सुधारक, भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ प्रचारक एवं समाज में उन्नत आदर्श के संस्थापक कहलाते हैं।

संदर्भ सूची–

1. रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास, पृ0सं0–339, 83(1)
2. रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास, पृ0सं0–349, 97(4)
3. लोकवादी तुलसीदास–विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ0सं0–42
4. रामचरितमानस (अरण्यकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास, पृ0सं0 520, 13(3)
5. रामचरितमानस (अरण्यकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास, पृ0सं0 539, 29(5)
6. रामचरितमानस (अरण्यकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास, पृ0सं0 540, 30(1)
7. तुलसीदास–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ0सं0 33
8. तुलसीदास–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ0सं0 34